International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 6, Issue 9, September 2019
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

संस्कृत साहित्य में-अव्ययस्वरूप एवं भेद की मीमांसा :

लेखक भवानीशंकर शर्मा ०डॉ :
संस्कृतचूरू ,लोहिया महाविद्यालय ,विभाग-

अव्यय पद का प्रयोग **परमात्मा** या **ब्रह्म** के लिए भी किया जाता हैसम्पूर्ण .क्योंकि वह अविनाशी है , ;किन्तु .ब्रह्माण्ड का मूल स्वरूप है**भाषा** की दृष्टि से जब विचार किया जाता हैतब , उसके**अविकारी** पद ही **अव्यय**कहे जाते हैं। व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ का प्रयास करें तो**"न व्येति इति अव्ययम्"**अर्थात् जिसका व्यय नहीं होता,वह **'अव्यय'** कहलाता है। यहाँ व्यय न होने का अर्थ हैउसके रूप में कोई विकार या परिवर्तन का न — ,होना। ऐसे शब्द का सभी लिङ्गों में रूप अपरिवर्तित रहता हैइसलिए इनकी यह सञ्ज्ञा सार्थकहै। जैसाकि कहा है—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अव्यय वह होता है,जो तीनों लिङ्गों—सभी विभक्तियों और सभी वचनों में परिवर्तित नहीं होता अर्थात् **अव्यय** की विभक्तियों)सुँप् आदि(,लिङ्गसूचकप्रत्ययों,आप्—ङीप् का अव्यय होने के कारण **अव्ययादाप्सुँप:**[1] से लोप हो जाता है। जैसे,अत्र—तत्र,क्व,पठित्वा,गन्तुम् आदि। **लघुसिद्धान्तकौमुदीकार** ने इसीलिए कहा—**स्वरादिनिपातमव्ययम्**[2])स्वर् आदि शब्द व निपात अव्यय हैं।(

अव्ययों के भेद—

अव्यय चार प्रकार के होते हैं—१.**उपसर्ग,** २.**क्रिया विशेषण-**३.**समुच्चयबोधक**तथा४.**मनोविकार सूचक।-**

१ .उपसर्ग—

जो क्रिया,सञ्ज्ञा तथा विशेषण शब्दों के प्रारम्भ में जोड़े जाते हैं,वे **उपसर्ग** कहलाते हैं। उपसर्ग को धातुओं से पूर्व में जोड़ने पर वे उनके अर्थों को बलात् बदल देते हैं। जैसाकि **सिद्धान्तकौमुदीकार** ने कहा है —

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार- संहार - विहारपरिहारवत्॥-

प्रहारः **सुँ + घञ् + हृ + प्र =**)चोट करना(
आहारः **सुँ + घञ् + हृ + आ =**)भोजन करना(
संहारः **सुँ + घञ् + हृ + सम् =**)विनाश,उपसंहार(
विहारः **सुँ + घञ् + हृ + वि =**)भ्रमण करना या सैर करना(

[1] अष्टाध्यायी .
[2]लघुसिद्धान्तकौमुदी .

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

परिहारः **= परि) सुँ + घञ् + हृ +**त्यागना,निराकरण(

कभी कभी-**उपसर्ग** के कारण धातु का अर्थ **उलट** (विपरीत)हो जाता है,कभी वही रहते हुए **विशिष्ट** हो जाता है और कभी ठीक**वही** रह जाता है। ऊपर इन तीनों स्थितियों को उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है। इस सम्बन्ध में यह श्लोकभी द्रष्टव्य है—

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा॥

संस्कृत में **उपसर्ग** २२ हैं—**प्र,परा,अप,सम्,अनु,अव,निस्,निर्,दुस्,दुर्,वि,आ**)आङ्(,**नि,अधि,अपि,अति,सु,उद्,अभि,प्रति,परि** और **उप**[3]। जैसे—

प्र;प्रभवति =भू+उद् = सृ + प्र ;उद्गच्छति =गम्+प्रसरति
+ वि हृ =विहरति;उद्+ पत् =उत्पततिनिर्गच्छति = गम् + निर् ,
+ परा भू =पराभवति+ अप ; सृ =अपसरतिआगच्छति = गम् + आ ,

२.क्रियाविशेषण—

वे **अव्यय** शब्द जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं,**क्रियाविशेषण** कहलाते हैं। **क्रियाविशेषण** सर्वनाम,संख्यावाचकविशेषण,तद्धित तथा कृदन्त शब्दों से बनते हैं। क्रियाविशेषण संस्कृत में कई प्रकार के -विशेषण-होते हैं। कुछ क्रिया**स्वः** आदि **अव्ययों** में परिगणित हैं,कुछ **सर्वनामों** से बनते हैं;जैसे— ,इदानीम्यथा,तथा आदि। कुछ क्रिया-विशेषण **संख्यावाची** शब्दों से बनते हैं;जैसे,एकधा—द्विधा,त्रिधा आदि। कुछ क्रिया विशेषण-**सञ्ज्ञाओं** से **तद्धित**प्रत्यय करने पर बनते है;जैसे— ,रामवत्कृष्णवत्,भस्मसात्,आत्मसात् इत्यादि। इस विवरण से यह ज्ञात होता है कि **क्रियाविशेषण अव्ययों**-को मूलतः **पाँच** भेदों में विभक्त किया जा सकता है —

क.**मूल अव्यय;**जैसे—**विना,वृथा** आदि।
ख.**सङ्ख्यावाचकोद्भव अव्यय;**जैसे—**एकधा,द्विधा,त्रिधा** आदि।
ग. **सर्वनामोद्भव अव्यय;**जैसे—**यदा,तदा,कदा**आदि।
घ. **तद्धितोद्भव अव्यय;**जैसे—**पुत्रवत्,भस्मसात्**आदि।
ङ. **कृदुद्भव अव्यय;**जैसे—**गत्वा,पठित्वा** आदि।

३.समुच्चयबोधकअव्यय—

जिनसे किसी समुदाय का बोध होता है,उन्हें **समुच्चय बोधकअव्यय** कहा जाता है। जैसे— **च,वा,तु,चेत्,अथ,अथा,अथो,परन्तु,किन्तु,अथवा,वा,हि** इत्यादि।

४.मनोविकारसूचकअव्यय—

वे **अव्यय,**जिनसे मन के विभिन्न विकार व्यक्त होते हैं,**मनोविकार-सूचकअव्यय** कहे जातेहैं। इन अव्ययों का वाक्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता। जैसे—**हा,धिक्,हन्त,बत,आ,:हुम्,हा,हा हा-**इत्यादि।
यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण अव्ययों के अर्थ तथा इनका पद या वाक्य में प्रयोग होने पर पदार्थ,विभक्ति आदि में आए परिवर्तन को बताया जा रहा है।

उपसर्गअव्यय-

पूर्व में बता दिया गया है कि **उपसर्ग** भी **अव्यय** हैं और इनके संयोजन से धातुओं का अर्थ बदल जाता है। सामान्यतः **उपसर्ग** लगने पर १.धातु का मुख्यार्थ बाधित होकर नवीन अर्थ को प्राप्त होता हैया २.धातु का वही अर्थ अनुवर्तित होता हैया ३. विशेषण बनकर धातु के उसी अर्थ को और अधिकस्पष्ट कर देता है—

धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते।
विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥

---

[3]लघुसिद्धान्तकौमुदी .

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

संस्कृत भाषा में सामान्यतः २२ **उपसर्गों** का प्रयोग पाया जाता है,जिनके नाम पीछे बता दिए गए हैं। यहाँ उनमें से **प्र,परा,अप,सम्,अनु ,दुस् ,निर् ,निस्** ,**अव,दुर्,वि,आ** ,(आङ्)**नि ,अधि ,अपि ,अति,सु ,उद्, ,अभिप्रति,परि** तथा**उप**के सम्बन्ध में चर्चा की जाएगी।

प्र—यह उपसर्ग**प्रकर्ष** —अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे(आधिक्य)**प्रणामः** (अधिकझुकना) में **प्र + नम् + ;घञ्**नम्)भ्वा०(**नमँ प्रह्वत्वे शब्दे च**)झुकनामें (**आधिक्य**अर्थ**प्र**से प्राप्त हुआ है।

परा,विपरीत) **—**उल्टा(**पराजय,:पराभवपराजयते ,:**आदि।

अप(दूर) **—अपहारः,अपकारः:अपकर्ष ,अपवादः** ,आदि।

सम्(सम्यक्) **—संस्कारः ,सम्मोहः ,संस्कृतिः,समालोचनम्** आदि।

अनु—(पश्चात्,पीछे(**अनुगमनम् ,अनुविधिः ,अनुसरणम्,अनुस्वारः** आदि।

(नीचे ,दूर)—**अव अवतारः:अवशेष ,अवमानः ,, अवशोषणम्** आदि।

निस्(बाहर ,बिना)— **निस्सारः निस्तेजः ,निस्सरणम् ,निश्शंकः** ,आदि।

निर्—(निषेध,बाहर(**निर्गच्छ,निर्दोष:निर्माण ,निर्वेदः ,:, निर्विवादः**आदि।

(कठिन)—**दुस् दुष्करः दुस्स्वप्नः ,दुश्शासनः ,दुस्सहः** ,आदि।

दुर्—(बुरा,दुष्ट(**दुराचारः,दुर्व्यवहारः ,दुर्योधनः ,दुर्योगः ,दुर्घटनम्**आदि।

वि—(बिना ,अलग(**विचल,(दूर हुआ):वियोग विगतः ,(वियोग):**आदि।

आ—(तक,कम(**आच्छद्** ,(चारों ओर तकढकना)**आकम्प**) :कुछकाँपनाआदि।(

(नीचे)—**नि निपतति निघातः ,निवारणम् ,निपातः ,निकायः** ,आदि।

अधि—(ऊपर(**अधिरोहति,अधिकारः:अधिशेष ,, अध्याहारः**आदि।

(निकट)—**अपि अपिधानम्** आदि।

अति—(बहुलता,उल्लङ्घन(**अतिक्रमः,अतिनिद्रा:अत्यन्त ,अत्याचारः** ,आदि।

सु—(अच्छा,सहज(**सुकृतम्,सुगमःसुदिनम् ,सुजनः ,सुलभः** ,आदि।

(ऊपर)—**उद् उद्गमनम्:उद्घोष ,उत्पत्तिः ,उत्पतनम् ,, उद्धारः** आदि।

(ओर)—**अभि अभिलाषः:अभीष्ट ,, अभिगमनम् अभ्यासः** ,आदि।

प्रति—(ओर,उल्टा(**प्रतिकारः,प्रतिगच्छ:प्रत्युत्पन्न ,प्रत्याशा** ,आदि।

परि—(चारों ओर(**परिगच्छति,परिपूतः,परिप्लुतःपरिखा** ,आदि।

उप—(निकट(**उपमानम्,उपासनम्उपनयनम् ,उपसर्गः ,उपवेदः** ,आदि।

कुछउपसर्ग **गति-सञ्ज्ञक**होते हैं। उनको भी धातु से पूर्व लगाते हैं। जैसे—**नमः नमस्कारः—** ,कारसुँ+नमस्)नमन करना।(**असत्**;(बुरा व्यवहार) **असत्कारः—सत्**;(सम्मान) **सत्कारः—साक्षात्—** ;(प्रत्यक्षज्ञान) **साक्षात्कारःअन्तः**;(छिपाहुआ) **अन्तर्हितः—अस्तम्**;(डूबा हुआ) **अस्तङ्गतः—आविः—** ,(प्रकट करना) **आविष्कारःआविर्भाव**;(प्रकट होना) **:प्रादुः—प्रादुर्भूतः** अस्तित्व में)आया;(**तिरः—** (अपमान)**तिरस्कारःतिरोभूतः** ,(ओझल होना)**तिरोहितः** ;(ओझल हुआ)**पुरः**प्रत्यक्ष) **:पुरोभव—** ,(होना**पुरस्कारः** ,(सामने रखना)**पुरोगतः** (अग्रणी हुआ) **स्वी**,(स्वीकृति) **स्वीकारः—स्वीकृतः** (सहमत हुआ) आदि।

क्रियाविशेषण अव्यय-

अत्र (यहाँ)—**अत्र** का अर्थ यहाँया यहाँ परहोता है। जैसे—

1. **अत्रा**ऽहं पठामि। अत्र शूरा2 सन्ति। :. **अत्र** चिन्ता न कार्या।

अद्य(आज)—**अद्य** का अर्थ हैइसी दिन।— यथा—

1. अग्रिमं कार्यम् **अद्य** कुर्यात्। 2.अहम् **अद्य** वैशालीं गमिष्यामि। 3.अपिनाम खलो विधिरनिच्छतोऽपिमे मरणम् **अद्यै**वोपपादयेत।(कादम्बरी)

इतः (यहाँ से)—यह तद्धितान्त अव्यय**तसिँल्**-प्रत्ययान्त है।अनुबन्धों का लोप हो **तस्** शेष रहता है—यथा .

1. **इतः** गच्छाम्यहम्। 2.तस्मात्कारणात् सतीश: **इतः** पलायते

इत्थम् (इस प्रकार)—यह**थमुँ**प्रत्ययान्तहै।यथा1—. तम् **इत्थं** दृष्ट्वा स वेदनां गतवान्।

इदानीम् (अब)—यह **दानीम्**प्रत्ययान्त है।**यथा1—.इदानीं** कार्यम् एतत् न करणीयम्। 2. मा भैष्ट,**इदानीम्** अहम् आगतः अस्मि।3.**इदानीं** सुहृद्भेदं श्रोतुमिच्छामः।

शनै(धीरे) :—यह अव्यय **धीरे** के अर्थ में प्रयुक्त होता है—यथा .

1. त्वम् अपि **शनै :**गच्छ।2.**शनै**र्यातिपिपीलिका।3.**शनै :**पन्था,:**शनै :**कन्था,**शनै :**पर्वतलङ्घनम्।4.**शनै :** पिपीलिका याति योजनानि शतानि च। अगच्छन् वैनतेयोपि,पदमेकंन गच्छति।

उच्चै ऊँचे) :से(—यह(उच्चैस्)**जोर से**इस अर्थ में प्रचलित है।यथा—

1. **उच्चै :**विहस्य। 2 . अस्मान् साधु विचिन्त्यसंयमधनान् **उच्चै :**कुलं चात्मनः।

नीचै(नीचे से) :—**धीमे स्वर से—**यह अर्थ भी है।यथा—

नीचै :वद, **नीचै :**शंस हृदि स्थितो ननु समे प्राणेश्वरः श्रोष्यति।

कथम् (कैसे)—कथम्**थमुँ** प्रत्ययान्त **अव्यय** है।यथा—

1. **कथं** मारात्मके त्वयि विश्वास?:2.**कथं** न ज्ञेयम् अस्माभिः?3.हा **कथं** सीतादेव्या ईदृशं जनापवादं देवस्य कथयिष्यामि।

कदापि (कभी)—यथा—कदाचित् कुपिता माता,न **कदापि** हरीतकी।

किल (निश्चित)—**किल**कई अन्य अर्थों में भी प्रयुक्त होता हैयथा—

1. बभूव योगी **किल** कार्तवीर्य2 ।:. प्रसह्य सिंह: **किल** तां चकर्ष।3 . इदं **किल**अव्याजमनोहरं वपु।:

पुनः(फिर)—यह बार—यथा .बार अर्थ में प्रयुक्त होता है-

1. **पुनः** वदतु। 2. गच्छतु भवान् **पुन**र्दर्शनाय।3.न **पुनः** एवं प्रवर्तितव्यम्। 4. तेहिमालयमामन्त्य **पुनः** प्राप्य च शूलिनम्।

यथा (जैसे)—यह **थाल्**प्रत्ययान्त है। जैसे—

1. **यथा** रामः आचरति।2.**यथा** कृष्णः कथयति।3.**यथा** खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।

तथा ,उस तरह)वैसे(—यहभी **थाल्**प्रत्ययान्त है।यथा—

1. यथासज्जनः कथयति **तथा** एव आचरति। 2 . न **तथैतानि** शक्यन्ते,सन्ति यन्तुमसेवया।

खलु (निश्चित)—सामान्यतः यह **निश्चयार्थक**है।यथा—अनुत्सेकः**खलु** विक्रमालङ्कारः।

कदा (कब)—रामः **कदा** गतवान्?त्वं **कदा** आगतः असि?भवान् भोजनं **कदा**भुनक्ति?

प्रातः (सवेरा)— **प्रातर्द्यूतप्रसङ्गेन मध्याह्ने स्त्रीप्रसङ्गतः।**
रात्रौ चौरप्रसङ्गेन कालो गच्छति धीमताम्॥[4]

चिरम्)देर तक(यथा1—. मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं **चिरम्**।2.**चिरं** जीवतु मेभर्ता। **चिरं** जीव,वत्स!

किमर्थम् (किसलिए) यथा—**किमर्थं** दहति चित्तम्?

कुतः (कहाँ से)इसका अर्थ—**किस कारण से**भी होता है।यह **तसिँल्**-प्रत्ययान्तहैजो,**पञ्चमी** के अर्थ में होता है।
यथा1 —. भवान् **कुतः** आयाति2?.**कुत**स्त्वाकश्मलमिदम्।...

समुच्चयबोधकअव्यय

जैसाकि पूर्व में ही कहा जा चुका है,जिनसे किसी **समुदाय** का बोध होता है,उन्हें **समुच्चय-बोधकअव्यय** कहा जाता है। यहाँ कुछ ऐसे ही अव्ययों के उदाहरण प्रस्तुत हैं—

चहिन्दी भाषा के— **और** शब्द का अर्थ **च** में निहित है। संस्कृत में **च** का प्रयोग सभीशब्दों के अनन्तर होता है अथवा प्रत्येकशब्द के बाद इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे1—. रामः **च** कृष्णः **च** गच्छतः।2.रामःकृष्णः **च** गच्छतः।

वा—यह अव्यय **या/अथवा** के अर्थ में प्रयुक्त होता है। वाक्य में इसका प्रयोग भी **च** के समान ही होता है।
जैसे1—. मोहनः **वा** दिनेश: **वा** गच्छेत्।2.मोहनः दिनेश :**वा** गच्छेत्।

---

[4]चाणक्यनीति .

तु,यह ऐसा अव्यय है— जिसका प्रयोग वाक्य के प्रारम्भ में नहीं होता है। यह हिन्दी के**'तो'**अव्यय का अर्थ रखता है। **भाषाविज्ञान** के अनुसार वस्तुतः **तु** सेही **तो** का विकास हुआ है। इसके उदाहरण हैं—

1. रामः **तु** गतवान्।2.इन्द्रः **तु** अद्य न आगमिष्यति।

चेत्/यदि—ये दोनों ही अव्यय उर्दू के **अगर** के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इनमें से हिन्दीभाषा में- **यदि** का प्रयोग तो **तत्सम** के रूप में होता ही है। इनमें से **चेत्** का प्रयोग वाक्यके प्रारम्भ में नहीं होता है। जैसे—

1. रामः **चेत्** तत्र गमिष्यति,अहं न गमिष्यामि। 2 . भवेद्विष्णुशङ्करः वा : **यदि** मम समक्षम् आगमिष्यति,पराजितः भविष्यति।

अथ':यह प्राय—**अनन्तर'**अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसी अर्थ में **अथ, व, अथो** अव्ययों का प्रयोग भी होता है। ये अव्यय **अथानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्र्न्येष्वथोऽथ**[5]अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।यथा—

1. **अथातो** ब्रह्मजिज्ञासा।2.**अथातो** धर्मजिज्ञासा।3.**अथा**स्तिकश्चिद्वाग्विशेष?:

परन्तुउर्दूके— **लेकिन** शब्द के अर्थ में संस्कृत के **परन्तु,किन्तु,परञ्च** अव्ययों का प्रयोग होता है। यथा—

1. हनुमान् **तु** लङ्कांगन्तुं पर्युत्सुकःआसीत्,**किन्तु** अन्ये वीरान। :

अथवा / वाये दोनों ही अव्यय— **या** के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इनमें से **वा** का प्रयोग पूर्वमें किया जा चुका है।

1. रामः गच्छेद् **अथवा** मोहनः2 ?. सीता **वा** अनसूया पठेत्।

हि / यतोहि—क्योंकि के अर्थ में ये अव्यय प्रयुक्त होते हैं। यह **निश्चितार्थक**भी है। यथा—

1. कंसव्रजं न गमिष्यति : **हि** तत्र तस्य शत्रु2 कृष्णः निवसति। :. एतत् जलं न पिब **यतोहि** अस्मिन् विष3वर्तते। :.अद्य ग्रामं मा गच्छ **यतोहि** ,मार्गे शत्रवः सन्ति.

यावत्यह अव्यय— **जब तक**के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जहाँ इसका प्रयोग होता है,वहाँ **तावत्** भी रहता है। **तावत्** का अर्थ है—**तब तक**।यथा—

1. **यावत्** दु,खं न पलायिष्यते: **तावत्** अहं सुखं न प्राप्स्यामि।

यदा / तदा—यदा का अर्थ है—**जब**। **तदा** का अर्थ है—**तब**।ये दोनों अव्यय भी साथसाथ रहते हैं। कहा भी - —है**यत्तदोर्नित्यसम्बन्ध**—।यथा(यत् व तत् का नित्य सम्बन्ध है) **:**

1. **यदा** भगवतः कृष्णस्य अवतारः भविष्यति,**तदा** दुष्टानां विनाशभविष्यति। :

तर्हियह— हिन्दी के **तो** के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला अव्यय है।यथा—

1. यदि रामः समये न उत्तिष्ठति **तर्हि** विद्यालयाय विलम्बभविष्यति। :

मनोविकारसूचकअव्यय-

मन के विकार की अभिव्यक्ति करने वाले **हे,अरे,हा,हा,हा-हन्त** आदि अनेक**अव्यय** हैं। उनमें से **धिक्**एकमहत्त्वपूर्ण **अव्यय** है,जो **धिक्कार** के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसके योग में सर्वत्र **द्वितीया** विभक्ति प्राप्त होती है;किन्तु कहीं कहीं-**प्रथमा** भी देखी जाती है। इसके **धिक्कार**अर्थ में एक-दो सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत हैं— **धिक्** तां च तं च मदनं च इमां च मां च। **धिक्** त्वां रामनिन्दकम्। प्राय अन्य :**मनोविकारसूचक**अव्ययों का वाक्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता। अतः वाक्य के पदों की विभक्तियाँ उनसे अप्रभावित रहती हैं। इसके उदाहरण हैं—

हन्त)—हर्ष व खेदसूचक(**हन्त** भो लब्धं मया स्वास्थ्यम्। **हन्त** प्रवृत्तं सङ्गीतकम्। **हन्त** धिङ् मामधन्यम्। स्मरामि **हन्त** स्मरामि।

आः—(क्रोधसूचक(**अहो आह आ—**एवंकिलासीत्?

हुम्/हम्—(क्रोधसूचक,प्रत्यास्मरण—यथा(

1. **हुं** ज्ञातम्। रामो नाम बभूव **हुं** तदबला सीतेति **हुम्**।2.अनु**हुं**कुरुतेघनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी।

---

[5]अमरकोष .

हा/हाहा)—दु(खसूचक:यथा—

1. **हा** प्रिये जानकि! **हा हा** देवि स्फुटति हृदयं2।....**हा** पितः क्वासि। **हा** वत्से मालति क्वासि।

बत)—दया-खेदसूचक(यथा1—.वयं **बत** विदूरतः क्रमागतो पशो2 कन्यका। :.अहो **बत** महत्पापं कर्तुव्यवसिता
वयम्। 3 . क्व **बत** हरिणकाणां जीवितं चातिलोलम्।

किम्/धिक्)—धिक्कारसूचक(यथा1—. **धिग्** इमां देहभृतामसारताम्।2.**धिक्** तान् **धिक्** तान् **धिग्** एतान् कथयति सततं कीर्तनस्थो मृदङ्ग3।:.**धिगर्था** :कष्टसंश्रया4।:.**धिङ्** मूर्ख!

अङ्ग/ भो/ :अयि/अये)—सम्मानसूचकआह्वान के अर्थ में(यथा—

1. **अयि** विवेकविश्रान्तमभिहितम्। 2.**अयि भो** महर्षिपुत्र! **अयि** विद्युत्प्रमदानां त्वमपि च दुखं न : ?जानासि3.**अये** गौरीनाथ त्रिपुरहर शम्भो त्रिनयन4!.**अये** मातलि! **भो** पुत्र?कुत्र गच्छसि !

अरे/रे/रेरे—(तिरस्कार के अर्थ में **,**(यथा1—. आत्मा वा **अरे** द्रष्टव्य,:श्रोतव्य :न वा **अरे** पत्यु :कामायास्या : पति2 प्रियो भवति। :. **अरे** महाराजं प्रति कुतः क्षत्रिया3।:.**रे रे** शङ्करगृहाधि-वासिनो जानपदा !:

अहो/ही—(विस्मयादिसूचक(यथा1—. **अहो** कामी स्वतां पश्यति।2.**अहो** मधुरमासां दर्शनम्।3.**अहो** रूपम् **अहो** वीर्यमहोसत्त्वमहो द्युति।हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः।: **ही** चित्रंलक्ष्मणेनोचे। आदि।

यहाँ प्रमाण के रूप में **लघुसिद्धान्तकौमुदी** का **अव्यय-प्रकरण** भी दिया जा रहा हैताकि उन सभी , अव्ययों कासरलता से बोध जाए—

स्वरादिनिपातमव्ययम्॥[6]

स्वर आदि निपातों की अव्यय संज्ञा होती है—**स्वरादयो निपाताश्चाव्ययसञ्ज्ञा:स्यु :**[7]।

स्वर्। अन्तर्। प्रातर्। पुनर्। सनुतर्। उच्चैस्। नीचैस्। शनैस्। ऋधक्। ऋते। युगपत्। आरात्। पृथक्। ह्यस्। श्वस्। दिवा। रात्रौ। सायम्। चिरम्। मनाक्। ईषत्। जोषम्। तूष्णीम्। बहिष्। अवस्। अधस्।समया। निकषा। स्वयम्। वृथा। नक्तम्। नञ्। हेतौ। इद्धा। अद्धा। सामि। वत्। ब्राह्मणवत्। क्षत्रियवत्। सना। सनत्। सनात्। उपधा। तिरस्। अन्तरा। अन्तरेण। ज्योक्। कम्। शम्। सहसा। विना। नाना। स्वस्ति। स्वधा। अलम्। वषट्। श्रौषट्। वौषट्। अन्यत्। अस्ति। उपांशु। क्षमा। विहायसा। दोषा। मृषा। मिथ्या। मुधा। पुरा। मिथो। मिथस्। प्रायस्। मुहुस्। प्रवाहुकम्,प्रवाहिका। आर्यहलम्। अभीक्ष्णम्। साकम्। सार्धम्। नमस्। हिरुक्। धिक्। अथ। अम्। आम्। प्रताम्। प्रशान्। प्रतान्। मा । माङ्। आकृतिगणोऽयम्॥

चादयो निपाताः॥[8]

च आदि की की निपात संज्ञा होती है—

च। वा। ह। अह। एव। एवम्। नूनम्। शश्वत्। युगपत्। भूयस्। कूपत्। सूपत्। कुवित्। नेत्। चेत्। चण्।कच्चित्। यत्र। नह। हन्त। माकि। नकिम्। माङ्। नञ्। यावत्। तावत्। त्वै। द्वै। न्वै। रै। श्रौषट्। वौषट्। :। माकिम्। नकि: स्वाहा। स्वधा। वषट्। तुम्। तथाहि। खलु। किल। अथो। अथ। सुष्ठु। स्म। आदह।

उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च॥ ०सू०ग))

उपसर्गस्वर और प् ,विभक्ति ,रतिरूपक भी अव्यय कहलाते हैं—

अवदत्तम्। अहंयु। अस्तिक्षीरा। अ। आ। इ। ई। उ। ऊ। ए। ऐ। ओ। औ। पशु। शुकम्। यथाकथाच। पाट्। प्याट्। : ॥:। चादिरप्याकृतिगण:। अये। ह्य। विषु। एकपदे। युत्।आत:अङ्ग। है। हे। भो

तद्धितश्चासर्वविभक्तिः॥[9]

---

[6],लघुसिद्धान्तकौमुदी.१.१.३७

[7] .लघुसिद्धान्तकौमुदी

[8]वही .

[9]अष्टाध्यायी .

यस्मात्सर्वा विभक्तिर्नोत्पद्यते स,तद्धितान्तोव्ययं स्यात्। परिगणनं कर्त्तव्यम्।तसिँलादय। :प्राक् पाशप : ।तसिवती। नानाञौ। एतदन्तमप्यव्ययम्॥:। अम्। आम्। कृत्वोर्था:प्राक्समासान्तेभ्य :शस्प्रभृतय

कृन्मेजन्त॥:[10]
कृद् यो मान्त एजन्तश्च तदन्तमव्ययं स्यात्। स्मारं स्मारम्। जीवसे। पिबध्यै॥

क्त्वा-तोसुँन्क-सुँन॥:[11]
एतदन्तमव्ययम्। कृत्वा। उदेतो॥:। विसृप:

अव्ययीभावश्च॥[12]अधिहरि॥

अव्ययादाप्सुँपः॥[13]अव्ययाद्विहितस्यापसुँपश्च लुक्। तत्र शालायाम्॥ :

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥(अव्ययलक्षणम्)

वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयो।:
आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा॥(भागुरिमतम्)

वगाह,:अवगाह,। पिधानम्:अपिधानम्॥

---***---***---

अध्यक्ष(राजस्थान) चूरू ,राजकीय लोहिया महाविद्यालय ,विभाग-संस्कृत ,

10 ,अष्टाध्यायी .१.१.३९

11 ,अष्टाध्यायी .१.१.४०

12 ,अष्टाध्यायी .१.१.४१

13,अष्टाध्यायी . २.४.८२

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.